।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। श्री बाबा गंगाराम देवाय नमः ।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दनाय नमः ।।

।। ऊं माता गायत्री देव्यै नमः ।।

विष्णु अवतारी

श्री बाबा गंगाराम अमृतवाणी

श्री बाबा गंगाराम अमृतवाणी

।।दोहे।।

श्री गणपति सुमिरन करें, धरें हृदय में ध्यान ।
विघ्न टले, मंगल करे, ऐसा दो वरदान ।।1।।
वर दे माता शारदे, मेटो तम अज्ञान ।
अमृतवाणी पाठ से, महिमा करें बखान ।।2।।
पूर्णब्रम्ह सर्वज्ञ हे, कृपासिन्धु भगवान ।
युग-युग में अवतार ले, करते जग कल्याण।।3।
त्रेता में श्री राम थे, द्वापर में घनश्याम ।
कलियुग में हरि रूप हैं, बाबा गंगाराम ।।4।।

जय श्री गंगाराम। पंचदेव सुखधाम।।

गंगाराम महामंत्र है, सकल गुणों की खान ।
गंगा पाप विनाशिनि, राम हृदय की आन ।।5।।
लीला तेरी है अजर, बाबा गंगाराम।
पंचदेव अवतार से, धन्य झुंझुनूं धाम ।।6।।
नर - नारायण रूप हैं, देवकी - गंगाराम ।
वही बने कृष्णार्जुन, हनूमान - श्रीराम ।।7।।
भांति - भांति कौतुक कियो, बाबा गंगाराम ।
देवकीनन्दन धन्य हुये, चरण प्रभु के थाम ।।8।।

जय श्री गंगाराम। पंचदेव सुखधाम।।

गंगा है पावन अति, मंगलमय हैं राम ।
ब्रम्ह शक्ति मिलकर बने, बाबा गंगाराम ।।9।।
अमृत बाबा नाम है, अमृत गंगाराम ।

अमृतमय जीवन करे , रटे जो गंगाराम ।। 10।।

विष्णु अवतारी प्रभु , सर्व लोक विश्राम ।

अपने भक्तों के करे, पल में पूरण काम ।। 11।।

जो भी चित्त लगाय के , लेते बाबा नाम ।

भवसागर से तारते , बाबा गंगाराम ।। 12।।

जय श्री गंगाराम। पंचदेव सुखधाम।।

अमृतवाणी पाठ ये, हरता सकल कलेष ।

नामामृत के पान से, मिटे राग विद्वेष ।। 13।।

बाबा की महिमा सरस, गाते वेद सुनाम ।

मन इच्छा पूरण करे , बाबा गंगाराम ।। 14।।

हाथ जोड़ विनती करें, हम बालक नादान।

नारायण अवतार प्रभु, हृदय भरो नव ज्ञान ।। 15।।

हम अवगुण की खान हैं, तुम हो दयानिधान ।

भूल चूक कर दो क्षमा, हमको अपना जान ।। 16।।

जय श्री गंगाराम। पंचदेव सुखधाम।।

-चौपाई-

भक्तों पर जब संकट छाते । विष्णु नर तन धरके आते ।। 1।।

राम रूप त्रेता में धारा । पृथ्वी का सब भार उतारा ।। 2।।

कृष्ण बने गोकुल में आये । महाभारत सा युद्ध कराये ।। 3।।

युग-युग की है रीत पुरानी । नारायण ही हैं वरदानी ।। 4।।

द्वापर बीता कलियुग आया । अखिल विश्व में संकट छाया ।। 5।।

काम क्रोध पाखण्ड का डेरा । मानव को पापों ने घेरा ।। 6।।

क्लेश द्वन्द से जग अकुलाया । भक्तों ने तब प्रभु को ध्याया ।। 7।।

हे विष्णुअवतारी आओ । आकर हमको राह दिखाओ ।। 8।।

दीनबन्धु करूणा के सागर ।मनहि विचार किये नटनागर ।।9।।

कलियुग की जो कलुषित काया।खुद जाकर देखूं मन आया।।10।।

गंगाराम रूप धरि जाऊं।गीता वचन सत्य कर आऊं ।।11।।

कौशल भूमि ब्रज तजि आऊं ।मरूभूमि को मान दिलाऊं ।।12।।

मत्स्यदेश में झुंझुनूं माही।लुप्त सरस्वती बहती जांही ।।13।।

वैश्य वर्ण को गौरव देऊं । विष्णु अवतारी पद देऊं ।।14।।

झुथाराम और लक्ष्मी माता ।जिनसे जोडूं पुत्र का नाता ।।15।।

जब सम्वत् उन्नीस सौ बावन।श्रावण शुक्ल की दशमी पावन।।16।।

शुभ नक्षत्र शुभ घड़ी में बाबा ।प्रगटे बदली जग की आभा ।।17।।

मोदीगढ़ फैला उजियारा ।दिव्य दरश पितु मात निहारा ।।18।।

पुलकित पिता व गद्गद् जननी ।अन्तरदशा जाय ना वरणी ।।19।।

पूर्वजन्म के भाग्य घनेरे ।नारायण सम बालक मेरे ।।20।।

नारायण के अंश से, प्रगटे गंगाराम ।

धन्य पिता और मात को, कोटि-कोटि प्रणाम।। दोहा 1

-चौपाई-

पल में हरली अपनी माया ।फिर से मनुज रूप दिखलाया ।।21।।

नारायण की लीला जानी । हर्षित देव, सन्त, मुनि, ज्ञानी ।।22।।

बालरूप में बाबा शोभित ।देख शशि भी नभ में मोहित ।।23।।

झुथारामजी बांटे बधाई । मां लक्ष्मी हर्षित मन माहीं ।।24।।

सखियां मंगलाचार करावे । घर-घर बन्दनवार बन्धावे ।।25।।

कुल के पुरोहित पण्डित आये।ग्रह-कुण्डली का भेद बताये ।।26।।

बालक है ये बड़ा विलक्षण । अवतारी से इसके लक्षण ।।27।।

गंगा के सम पावन होगा ।राम सरिस भवतारण होगा ।।28।।

राम नाम को मंगल भाख्यो ।गंगाराम नाम द्विज राख्यो ।।29।।

गंगाजी और राम का संगम ।गंगाराम रटे जड़ जंगम ।।30।।

महामंत्र है ये कलियुग का ।पार नहीं इसके प्रयोग का ।।31।।

जो भी उनके सानिध्य आता। ब्रम्हानन्द का स्वाद वो पाता ।।32।।

दया, प्रेम और सत्य के आगर।दानी और करूणा के सागर ।।33।।

निर्धन जन जो नजर में आये ।अंगवस्त्र उनको दे आये ।।34।।

याचक एक द्वार पे चीन्हा ।स्वर्णहार उसको दे दीन्हा ।।35।।

परमारथ की राह दिखाई । लीला में बीती तरूणाई ।।36।।

गृहस्थी लोकाचार निभाया ।माया मोह पर बान्ध न पाया ।।37।।

जो भी मुख से निकली वाणी ।भक्तों ने वो सच कर जानी ।।38।।

सत् को जग आधार बताया ।सत् मत छोड़ो ये समझाया ।।39।।

सत् में है ब्रह्माण्ड समाया ।सत् को सच्चिदानन्द बताया ।।40।।

बाबा गंगाराम ने , तब यह किया विचार ।

अर्चा विग्रह पूजा को, देऊं पुनः आधार ।। दोहा 2

-चौपाई-

जन्म भूमि का कर्ज चुकाकर ।कर्म किये कर्मभूमि आकर ।।41।।

झुंझनूं से निकली वो ज्योति ।पंहुची कौशल भूमि होती ।।42।।

झुंझनूं से सफदरगंज आये ।अवधभूमि फिर से मन भाये ।।43।।

जग कल्याण को जग में आये ।कल्याणी तट उनको भाये ।।44।।

कल्याणी की पावन धारा । कर्म-धर्म करते विस्तारा ।।45।।

कर्मयोग का मर्म बताया । लिप्त नहीं पर करले माया ।।46।।

सकल सृष्टि जो हाथ नचावे ।कर्म की महिमा कर दिखलावे।।47।।

भेद कोई भी जान न पाया ।अपना रूप नहीं दिखलाया ।।48।।

राधामाधव धाम बनाया । ब्रम्ह एक ये पाठ पढ़ाया ।।49।।

राम नाम शिव को ज्यूं भावे। बाबा के उर शिव ही समाये ।।50।।

किये वहीं शिवलिंग प्रतिष्ठा ।जिनमें थी बाबा की निष्ठा ।।51।।

कल्याणी जल नित्य चढ़ावें । पारिजात पुष्पों से सजावें ।।52।।

पारिजात भी धन्य हुआ था ।बाबा हेतु प्रगट हुआ था ।।53।।

लक्ष्मीकूप का निर्मल पानी ।सेवन करते ज्ञानी-ध्यानी ।।54।।

उसमें थी माता की ममता ।पहचानी बाबा ने क्षमता ।।55।।

एक बार कौतुक मन आया ।कल्याणी जल उन्हें सुहाया ।।56।।

विष्णुरूप जल में दिखलाये ।बाहर बाबा खड़े मुस्काये ।।57।।

देखी सबने वह परछाई । लीला कुछ भी समझ न आई ।।58।।

है कोई ये तो अवतारी । बाबा तेरी लीला न्यारी ।।59।।

जन-जन में जब चर्चा छाई ।पल में बाबा बात भुलाई ।।60।।

सतयुग, त्रेता, द्वापर में , प्रगट रूप में आऊं ।

कलि में छिप लीला करूं ,त्रियुग औतार कहाऊं।। दोहा 3

-चौपाई-

देखी जब जन की अधिकाई ।धाम गमन की मन में आई ।।61।।

उन्नीस सौ चौरानवे सम्वत् ।पौष शुक्ल चतुर्थी आगत ।।62।।

मात्र बयालिस वर्ष की आयु ।बान्ध सकी ना थी अल्पायु ।।63।।

सुप्रभात की छाई आभा ।पहुंचे कल्याणी तट बाबा ।।64।।

पावन वट का वृक्ष वहां था ।लगी समाधी वृक्ष जहां था ।।65।।

बाबा बैठे योगासन में । ध्यान किया मन ब्रम्हरंध्र में ।।66।।

योगाग्नि से तन को जारे। गरूड़ चढ़े निज धाम सिधारे ।।67।।

जड़ वट तरू भी सिहर उठा तब।देखा प्रभु का धाम गमन जब ।।68।।

देहोत्सर्ग वटवृक्ष कहाया ।जड़ चेतन का भेद मिटाया ।।69।।

लीला देखन देव पधारे ।जय-जय गंगाराम उचारे ।।70।।

अजब है बाबा तेरी माया ।तुझमें है ब्रम्हाण्ड समाया ।।71।।

जो यह सुयश नेम से गाये ।बाबा पद भक्ति वो पाये ।।72।।

भगवन जब लीला को आते।भक्त को लाते मान बढ़ाते।।73।।

राम के संग हनुमान पधारे ।कृष्ण सखा अर्जुन को प्यारे ।।74।।

बाबा के सुत देवकीनन्दन । भक्तिभाव से करते वन्दन ।।75।।

बाबा को पहचान लिया था । हृदय में उनको धार लिया था ।।76।।

मूर्तिमान तपधर्म के राशी । सद्गृहस्थ त्यागी मृदुभाषी ।।77।।

गायत्री वामा बन आई । मानों शिव ने शक्ति पाई ।।78।।

बाबा पथ जो इंगित करते । भक्ति भाव से उसपे चलते ।।79।।

सत्य हेतु सब कुछ बिसराया । भक्त शिरोमणि का पद पाया ।।80।।

भक्त और भगवान का , पावन पुण्य चरित्र ।

विष्णु लोक से शुरू हुआ, फिर से सुयश पवित्र ।। दोहा 4

-चौपाई-

शुरू हुई फिर नई कहानी । भक्त शिरोमणि ने पहचानी ।।81।।

अर्धरात्रि घनघोर निशा थी । सूझ रही ना कोई दिशा थी ।।82।।

देवकी पंहुचे तेज जहां था । धरती में एक गर्त वहां था ।।83।।

बोले गढ्ढा खोद के देखो । बाबा की माया को देखो ।।84।।

प्रगटी उसमें अद्भुत गरिमा । दुर्गा, शिव, कपि, श्री की प्रतिमा ।।85।।

बाबा की फिर प्रगटी मूरत । दिव्य छटा मनभावन सूरत ।।86।।

हुई सिंहासन में सब शोभित । मध्य में बाबा हुये सुशोभित ।।87।।

अखण्ड ज्योत की निकली ज्वाला । सिंहासन फिर नभ में चाला ।।88।।

देव सहचरी संग में आये । पुष्प वृष्टि कर मंगल गाये ।।89।।

क्षण में फैली अद्भुत माया । दिव्य प्रकाश गगन में छाया ।।90।।

फिर गूंजी नभ अमृतवाणी । विष्णुरूप बाबा की वाणी ।।91।।

सुनो देवकी झुंझनूं जाओ । धर्मध्वजा जाकर फहराओ ।।92।।

पंचदेव संग प्रगट हुआ मैं । जग कल्याण को सगुण हुआ मैं ।।93।।

सफल करो अर्चावतार को । आराधन भक्ति के सार को ।।94।।

विग्रह में प्रवेश करूंगा । भक्तों के दुख सकल हरूंगा ।।95।।

गंगाराम जो दोहरायेगा । भवसागर से तर जायेगा ।।96।।

वाणी अमृत घोल रही थी । अन्तर के पट खोल रही थी ।। 97 ।।

भक्त देवकी होकर गद्गद् । हुये समर्पित छूकर के पद ।। 98 ।।

बोले मैं तो हूँ अज्ञानी । तुच्छ दास हूं मैं अभिमानी ।। 99 ।।

हूं संसारी विकट जगत में । कलिमल असत् करेगा सत् में ।। 100 ।।

भाव विह्वल थे देवकी, चले अश्रु की धार ।

बोले कैसे मैं सहूँ, दैविक तेज अपार ।। दोहा 5

-चौपाई-

बाबा बोले मत घबराओ । मेरी शक्ति लेकर जाओ ।। 101 ।।

सिर्फ जरा तुम हाथ बढ़ाओ । भक्ति की सामर्थ्य दिखाओ ।। 102 ।।

संकट विकट सकल कट जाये । दुर्जन निर्बल सब हो जाये ।। 103 ।।

बाबा ने सिर हाथ धरा जब । पल में संशय दूर हुआ सब ।। 104 ।।

धन्य हुआ मैं किया अनुग्रह । करूं प्रतिष्ठित दैविक विग्रह ।। 105 ।।

सपने को साकार करूं मैं । मन्दिर का निर्माण करूं मैं ।। 106 ।।

जो नित उठ सम्वाद ये गावे । मनवांछित फल तत्क्षण पावे ।। 107 ।।

भक्त देवकी झुंझनूं धाये । गंगादशहरा नींव लगाये ।। 108 ।।

पुण्य धाम का पहला प्रस्तर । शेष प्रभु धारण को तत्पर ।। 109 ।।

विश्वकर्मा ने हाथ लगाया । नवनिर्माण का भार उठाया ।। 110 ।।

ज्यूं-ज्यूं मन्दिर शिखा उठाये । निज भाई कुचक्र चलाये ।। 111 ।।

धर्म राह रोड़े अटकाये । दुर्योधन सम बैर निभाये ।। 112 ।।

भक्त देवकी सहते जाते । मन में कुछ भी त्रास ना लाते ।।113 ।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन । धीरज, धैर्य, दया हित वन्दन ।। 114 ।।

भवन बना अति सुन्दर सुखकर । पंचदेव मन्दिर जन प्रियकर ।। 115 ।।

दो हजार बत्तीस विक्रमी में । ज्येष्ठ माह की शुभ दशमी में ।।1 16 ।।

गंगादशहरा शुभ घड़ी आई । पाटोत्सव की बेला लाई ।। 117 ।।

धन्य झुंझनूं नगर हुआ था । स्वागत हेतु सजा हुआ था ।। 118 ।।

देश –देश के पण्डित आये ।प्राणप्रतिष्ठा यज्ञ कराये ।। 119।।

जगद्गुरू ने करी प्रतिष्ठा ।मूर्तिमान हुये जग सृष्टा ।। 120।।

बाबा छवि मन मोहिनी, देव करे सत्कार ।

कलिमल का नाशा करे, जनहित तव अवतार ।। दोहा 6

–चौपाई–

पंचदेव में पांच देवालय ।पंच प्रभु की होती जय जय ।। 121।।

दायें शिव परिवार है राजे ।लिंगरूप में आय विराजे ।। 122।।

महालक्ष्मी का रूप निराला ।धन वैभव से करे निहाला ।। 123।।

बायें बैठे हनुमत वीरा । भगतों की जो हरते पीड़ा ।। 124।।

एक भवन बैठी मां दुर्गा ।अष्टभुजी जननी नवदुर्गा ।। 125।।

निज मन्दिर में बाबा शोभित ।सारे जग को करते मोहित ।। 126।।

हुये प्रतिष्ठित भक्तपरायण । श्री विष्णु श्री मन्नारायण ।। 127।।

श्वेतवर्ण पीताम्बर धारी ।वैष्णव तिलक क्रीट मनुहारी ।। 128।।

म्कराकृत कुण्डल मन मोहे।गल वन माल हृदय मणि सोहे।। 129।।

नेत्र लगे मानों शशि भानू ।योगासन मुद्रा लगि जानू ।। 130।।

प्राची प्रभाकर करे अभिनन्दन।प्रथम किरण से चरणन वन्दन।। 131।।

नृसिंह रूप श्री सत्यनारायण ।गंगाराम बने जग तारण ।। 132।।

बाबा कारण कार्य स्वरूपम ।जग संचालक रूप अनूपम ।। 133।।

सकल सृष्टि में छाई चरचा ।बाबा देते पल में परचा ।। 134।।

भगतों के दुख हरते ऐसे ।सूरज हरता तम को जैसे ।। 135।।

गंगा दशहरा नित हो उत्सव ।सकल गूंजते भक्तों के रव ।। 136।।

पावन रज अति मंगलकारी ।त्रिविध ताप दु:ख नाशनहारी ।। 137।।

कूप का जल है गंगाजल सम।निर्मल पावन अमृत निरूपम ।1 38।।

तरूवर मानों करे आरती ।पुष्प लतायें मंत्र सुनाती ।। 139।।

मन्दिर भवसागर का सेतु । कल्पवृक्ष ये भक्तों हेतु ।। 140।।

भागीरथ सम देवकी, लाये गंगाराम ।
तीन लोक में गूंज उठा, पंचदेव का नाम ।। दोहा 7

-चौपाई-

दुष्टों को यश नहीं सुहाया ।प्रभु प्रसाद में विष मिलवाया ।। 141 ।।
हाहाकार मचा तब भारी ।हुये देवकी व्याकुल भारी ।। 142 ।।
धन वैभव परित्याग करूं मैं ।चरणों से नहीं दूर रहूं मैं ।। 143 ।।
सम्पत्ति कर चरणों में अर्पित ।हरिश्चंद्र सम त्यागे समुचित ।। 144 ।।
दुनिया से संसर्ग भी त्यागा ।सब कुछ त्यागा सत्य न त्यागा ।। 145 ।।
भक्ति की धुन ऐसी लागी ।राज पाट तज बने विरागी ।। 146 ।।
मन्दिर परिसर बना निकेतन ।अम्बरीष सम सारे परिजन ।। 147 ।।
सन्तति ने भी वचन सुनाया ।भक्तिपथ है हमको भाया ।। 148 ।।
भव बन्धन में नहीं बन्धेगें ।जग के बोलों को सह लेगें ।। 149 ।।
भक्ति का इतिहास रचाया ।देख के कलियुग भी शर्माया ।। 150 ।।
नित प्रभात नव होती लीला ।कालचक्र पर बड़ा हठीला ।। 151 ।।
दो हजार उनचास जो आया ।कृष्ण वैषाख चतुर्थी लाया ।। 152 ।।
महाप्रयाण की बेला जानी ।भक्त शिरोमणि बोले वाणी ।। 153 ।।
सत्य शिवम् है सुन्दर सुखकर ।जगत दुखी है सत्य त्यागकर ।। 154 ।।
क्लेष,कपट,छल देख न पाऊं ।जग तजि प्रभु चरणों में जाऊं ।। 155 ।।
गंगाराम नाम मुख गाये ।नश्वर काया तज कर धाये ।। 156 ।।
अग्नि परीक्षा का दिन आया ।चिता पे भक्ति तप दिखलाया ।। 157 ।।
सांच को आंच न आने पाये ।चिता की पावक भी सकुचाये ।। 158 ।।
गायत्री कहे हाथ जोड़कर ।सत् की साखी देवो दिनकर ।। 159 ।।
हे बाबा गर सत्य है भक्ति ।दिखा दो सबको अपनी शक्ति ।। 160 ।।

शब्द चिता में तब हुआ, स्वतः उठ गया हाथ ।

मृत्युंजयी होकर दिया , सबको आशीर्वाद ।। दोहा 8

-चौपाई-

सुख शान्ति का वरद हस्त वो। अधमों हेतु विकट शस्त्र वो।। 161।।

बालरूप मुखमण्डल छाया । निश्छल सरल भाव दर्शाया ।। 162।।

शीश उठी जल धार तरंगा। ज्यूं शिव जटा से निकली गंगा ।। 163।।

जल धारा पावक में गिरती। त्रिभुवन को पावन वो करती ।। 164।।

जड़ तन में चेतन दर्शाये। ज्यूं कपि हृदय राम दिखलाये ।। 165।।

चमत्कार लख रवि रथ ठहरा। धरती डोली अम्बर सिहरा ।। 166।।

धन्य धन्य हे देवकीनन्दन। तुम सा भक्त ना तुमसा नन्दन।। 167।।

दश दिशि गूंजी जै-जैकारी । जै-जै-जै विष्णु अवतारी ।। 168।।

अपने भक्त का मान तू रखता। भक्त हेतु निज नियम बदलता ।। 169।।

गंगाराम मंत्र जो गावे । सो नर भक्त शिरोमणि भावे ।। 170।।

देवकीनन्दन जो कोई भजता । बाबा उसके संकट हरता ।। 171।।

एक शक्ति दो रूप बनाये । स्वयं अंश निज भक्ति कराये ।। 172।।

वेद पुराण तेरा यश गाये । नेति-नेति कह पार न पाये ।। 173।।

गंगाजल सम विपद विनाशी । राम नाम सम स्वयं प्रकाशी ।। 174।।

हम बालक तेरे अज्ञानी । अवगुण क्षमा करो वरदानी ।। 175।।

काम, क्रोध, मद, लोभ हटाओ। रोग शोक सब दूर भगाओ ।। 176।।

गंगाराम नामामृत वाणी । भवतारिणि ये अमृत वाणी ।। 177।।

जो नित अमृतवाणी गाये । जग के भोग सकल सुख पाये ।। 178।।

सतमारग से कभी ना भटके । भवसागर में वो ना अटके ।। 179।।

अन्तर से जो ध्यान लगावे । बाबा की चरणन रज पावे ।। 180।।

कलियुग में प्रत्यक्ष हैं , बाबा गंगाराम ।

भक्त सहित भगवान को, बारम्बार प्रणाम।। दोहा 9

श्री बाबा गंगाराम अमृतवाणी (उत्तरार्ध)

दोहा

अमृतवाणी पाठ का, अभी नहीं विश्राम ।
आगे की गाथा बड़ी, निश्छल और निष्काम ।। दोहा 10
कलियुग में माँ गायत्री, शक्ति का आधार ।
उनके जप-तप-त्याग को भूले ना संसार ।। दोहा 11

-चौपाई-

शक्ति रूप गायत्री माता, सुनो सुनाये उनकी गाथा ।। 181 ।।
कथा ये पावन बड़ी सुहानी, सुनकर बरसे आँख से पानी ।। 182 ।।
आश्विन शुक्ला एकम आई, घर-घर माही खुशियाँ छाई ।। 183 ।।
नगर चिड़ावा जन्म लिया था, प्रादुर्भाव शक्ति का हुआ था ।। 184 ।।
अद्भुत अनुपम रूप निराला, मन को पावन करने वाला ।। 185 ।।
पाकर कन्या को आंगन में, मात-पिता हुए हर्षित मन में ।। 186 ।।
देख कुंडली ज्योतिष बोले, अपने मन के भाव वे खोले ।। 187 ।।
कन्या नहीं है ये साधारण, जग तारण का बनेगी कारण ।। 188 ।।
शक्ति का स्वरुप ये कन्या, देवी का ये रूप है कन्या ।। 189 ।।
जैसे अनुसुइया सावित्री, नाम रखो इनका गायत्री ।। 190 ।।
प्रभु सेवा का कार्य करेगी, कलियुग में इतिहास रचेगी ।। 191 ।।
सत् ये अपना दिखलायेगी, घर-घर में पूजी जायेगी ।। 192 ।।
बाल्यकाल से थी आसक्ति,विष्णु की वो करती भक्ति ।। 193 ।।
वेद पुराण का सार बताती, भगवत गीता ज्ञान सुनाती ।। 194 ।।
आँख मूंद जब ध्यान लगाती, दो-दो छवि वो सम्मुख पाती ।। 195 ।।
एक छवि विष्णु की आती, दूजी वो पहचान न पाती ।। 196 ।।
गायत्री पूछे विचलित हो, प्रभु बतलाओ आप कौन हो ।। 197 ।।

जब से आप हृदय में आये, मेरी वाणी सबको भाये ।। 198।।

पग-पग पर मेरी रक्षा करते, हर पल मुझको आप ही दिखते ।। 199।।

कैसी है ये सारी माया, भेद मेरे कुछ समझ न आया ।। 200।।

लगन लगाए विष्णु की, गायत्री दिन रात ।

पहुँची किशोरावस्था में, वह भी समय के साथ ।। दोहा 12

जिसकी लगाकर बैठी थी, बचपन से वह आस ।

आखिर उसके जीवन की, घड़ी वो आई खास ।। दोहा 13

-चौपाई-

एक समय रात्रि निद्रा में, सपना देखा गायत्री ने ।। 201।।

हो साकार छवि वह आई, जो गायत्री के मन भाई ।। 202।।

गायत्री के सम्मुख आकर, बोले सुन तू ध्यान लगाकर ।। 203।।

जिज्ञासा जो तेरे मन में, दूर करूँ मैं वो एक क्षण में ।। 204।।

मैं हूँ विष्णु का अवतारी, कलियुग का हूँ कलिमलहारी ।। 205।।

एक भक्त तुम जैसा मेरा, बनेगा जीवन साथी तेरा ।। 206।।

सत्य धर्म उसका स्वरुप है, भक्ति का साकार रूप है ।। 207।।

दिव्य तेज उसको है दीन्हा, तुम दोनों को मैंने चीन्हा ।। 208।।

वह शिव है तू उसकी शक्ति, करोगे अनुपम मेरी भक्ति ।। 209।।

लीला अद्भुत उत्तम होगी, त्याग भक्ति की ज्योत जगेगी ।। 210।।

सत का झंडा लहरायेगा, सतयुग खुद को दोहरायेगा ।। 211।।

अंतर्ध्यान हुए बतला के, गायत्री की खुल गई आंखे ।। 212।।

शुभ दिन सुन्दर घड़ी वो आई, देवकीनंदन के संग ब्याही ।। 213।।

कदम रखा जो घर के अन्दर, दिखी वहां वो मूरत सुन्दर ।। 214।।

देवकी से पूछे गायत्री, हे स्वामी ! यह किसकी मूर्ति ।। 215।।

देवकीनंदन ने बतलाया, जिनका दर्शन तुमने पाया ।। 216।।

ये हैं विष्णु के अवतारी, ये ही अपने पालनहारी ।।217।।

गंगाराम नाम है इनका, मिलता हर पल परचा जिनका ।।218।।

आराध्य देव हैं यही हमारे, हमको हैं प्राणों से प्यारे ।।219।।

गायत्री सुनकर हुई विष्मित, रोम-रोम हर्षित और पुलकित ।।220।।

शिव को शक्ति मिल गई, पूरा हुआ वचन ।

गंगाराम को सौप दिया, दोनों ने जीवन ।।दोहा 14

जीवन पथ पर चल पड़े, मन में ले विश्वास ।

त्याग, तपस्या, भक्ति का, रचा नया इतिहास ।।दोहा 15

-चौपाई-

बनके देवकी की परछाई, गायत्री जीवन में आई ।।221।।

पथ में फूल मिले या काँटे, दोनों ने मिलजुल कर बाँटें ।।222।।

धन दौलत की चाह नहीं थी, लौ भक्ति की मन में जगी थी ।।223।।

समय की धारा बहती जाये, वंश बेल भी बढ़ती जाये ।।224।।

चार पुत्रियाँ और पुत्र दो, कुल दीपक बनकर आये वो ।।225।।

मात-पिता परिवार के संग में, रंगे हुये सब भक्ति रंग में ।।226।।

होने को सब थे संसारी, पर तृष्णा त्यागी थी सारी ।।227।।

सेवा भक्ति करते-करते, देर न लगती समय गुजरते ।।228।।

बाबा ने फिर वचन सुनाया, मंदिर का आदेश पठाया ।।229।।

देवकीनन्दन वचन खूब निभाए, पंचदेव मंदिर बनवाए ।।230।।

लीला प्रभु की समझ न आये, निज भक्तों को खूब तपाये ।।231।।

घर, परिवार, कुटिलजन सारे, तानों के विष वाण वे मारे ।।232।।

कोई उनको पागल कहते, कोई कहे आडम्बर करते ।।233।।

काँटों भरी राह पर चलते, हर क्षण विष के प्याले पीते ।।234।।

हुई सयानी भी संतानें , जिनकी चिंता लगी सताने ।।235।।

एक तरफ भक्ति पथ भारी, एक तरफ थी दुनियादारी ।। 236 ।।

मात-पिता की व्यथा को जाना, संतानों ने दुःख पहचाना ।। 237 ।।

बोले आपका व्यथित जो मन है, उस दुविधा का कारण हम हैं ।। 238 ।।

आज प्रतिज्ञा करते हैं हम, ब्रम्हचर्य धारें आजीवन ।। 239 ।।

पंचदेव मंदिर का द्वारा, अब होगा संसार हमारा ।। 240 ।।

सुन संतानों का वचन, लगा कलेजे तीर ।

स्तब्ध हो गए मात-पिता, ज्यूँ बिन प्राण शरीर ।। दोहा 16

तीन युगों में देखा ना, ऐसा कोई परिवार ।

संसारी हो त्याग दे, धन वैभव संसार ।। दोहा 17

-चौपाई-

संतानों की सुनकर वाणी, आँखों में भर आया पानी ।। 241 ।।

लगा कलेजे वज्र गठीला, कैसी परीक्षा कैसी लीला ।। 242 ।।

संताने ही बनी बैरागी, जीवन में क्या रह गया बाकी ।। 243 ।।

अब क्या होगा हम क्या जाने, प्रभु की लीला प्रभु ही जाने ।। 244 ।।

धन दौलत का अब क्या करना, अब तो तपसी बन कर रहना ।। 245 ।।

तुलसीदल हाथों में लेकर, वचन सत्य और धर्म का देकर ।। 246 ।।

बाँट दिया धन वैभव माया, रिश्ते नातों को बिसराया ।। 247 ।।

मन में संशय उन्हें हुआ जब, स्वर्ण दांत भी दान किया तब ।। 248 ।।

शाक-पात आहार बनाये, पर मन में कभी सोच न लाये ।। 249 ।।

मंदिर था बस एक ठिकाना, और कहीं ना उनको जाना ।। 250 ।।

जब-जब उन पर विपदा आती, गायत्री तब धीर बंधाती ।। 251 ।।

समय चक्र भी खेल दिखाए, देवकीनंदन जग तज धाये ।। 252 ।।

गायत्री के सत् की परीक्षा, आज प्रभु की कैसी इच्छा ।। 253 ।।

चिता सजी थी मंदिर माही, द्रौपदी भांति टेर लगाई ।। 254 ।।

धर्म हमारा जो है सच्चा, तो दिखलादो बाबा परचा ।। 255 ।।

बाबा ने इतिहास रचाया, चमत्कार जग को दिखलाया ।। 256 ।।

जै-जैकार उठी चहुँ दिश से, हाथ उठा जब नश्वर तन से ।। 257 ।।

बालरूप और जल की धारा, चकित हो गया ये जग सारा ।। 258 ।।

कलियुग में सतयुग सी भक्ति, देव करे पुष्पों की वृष्टि ।। 259 ।।

भक्त के वश भगवान हैं रहते, वेद-पुराण यही है कहते ।। 260 ।।

मात गायत्री ने लिया, अपने सिर पर भार ।

सेवा गंगाराम की, करे सहित परिवार ।। दोहा 18

जगमाता तपधारिणी, भक्ति का अवतार ।

त्यागमूर्ति वो साधिका, लीला अपरम्पार ।। दोहा 19

-चौपाई-

सबको सत्य की राह दिखाती, दीन दुखी को गले लगाती ।। 261 ।।

मन में लाखों दर्द दबाकर, मिलती थी सबसे मुस्काकर ।। 262 ।।

बाबा का पर्चा बतलाया, घर-घर उनका नाम गुंजाया ।। 263 ।।

प्रभु भक्ति का भेद बताती, जीवन का नव मंत्र सिखाती ।। 264 ।।

बिन मांगे सब कुछ दे देती, उसके सारे दुःख हर लेती ।। 265 ।।

ममतामयी थी भोली सूरत, गायत्री करुणा की मूरत ।। 266 ।।

सत्य हुयी सब उनकी वाणी, सारे जग ने बात ये मानी ।। 267 ।।

भक्तिवृक्ष को ऐसा सींचा, बन गया वो वट वृक्ष सरीखा ।। 268 ।।

संतानें थी माँ का संबल, साथ निभाती उनका हर पल ।। 269 ।।

त्याग, तपस्या, भक्ति उनकी, तब सारे संसार ने देखी ।। 270 ।।

दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती, तीनों की छवि माँ में दिखती ।। 271 ।।

मन में था सागर भक्ति का, संगम था तीनों शक्ति का ।। 272 ।।

जन-जन में विश्वास जगाकर, सत्य-धर्म की राह दिखाकर ।। 273 ।।

धीरे-धीरे वो दिन आया, प्रभु का एक संदेशा लाया ।। 274 ।।

माता सबसे कहे बताओ, दशमी कब है यह बतलाओ ।। 275 ।।

बाबा का सन्देश है आया, दशमी के दिन मुझे बुलाया ।। 276 ।।

संतानों को सौप के लीला, महाप्रयाण जगत से कीन्हा ।। 277 ।।

मंगसिर शुक्ला दशमी आई, जग को तज निज लोक को धाई ।। 278 ।।

देखा सबने जाते-जाते, बोल रही थी माँ की आँखें ।। 279 ।।

पहले तो था एक घर मेरा, अब होगा घर-घर में बसेरा ।। 280 ।।

मृत्युलोक में लीला का, करके पूरण काम ।

मिलन हुआ शिव शक्ति का, फिर से अपने धाम ।। दोहा 20

सारे जग को हो गया, मन में ये विश्वास ।

साधारण नहीं भक्त थे, किया धरा पे वास ।। दोहा 21

-चौपाई-

भक्त बिना भगवान अधूरे, दोनों मिलकर होते पूरे ।। 281 ।।

हनुमत बिन श्रीराम कहाँ है, भक्त जहाँ भगवान वहां है ।। 282 ।।

बाबा गंगाराम की शक्ति, देवकी-गायत्री की भक्ति ।। 283 ।।

त्रिशक्ति ने खेल रचाया, नवयुग का इतिहास बनाया ।। 284 ।।

बाबा ने सन्देश पठाया, उत्तम, रुचिकर वचन सुनाया ।। 285 ।।

देवकीनंदन भक्ति रूपा, गायत्री है शक्ति स्वरूपा ।। 286 ।।

इनकी भक्ति का बल भारी, जान गई ये दुनिया सारी ।। 287 ।।

पंचदेव निज धाम के अन्दर, मंदिर इनका बनेगा सुन्दर ।। 288 ।।

जो प्राणी दर्शन को जाये, मेरा आशीर्वाद वो पाये ।। 289 ।।

भक्ति की वहां बहेगी धारा, पूजेगा इनको जग सारा ।। 290 ।।

धाम बना फिर अति अभिरामा, आशीर्वाद मंदिर है नामा ।। 291 ।।

युगल रूप में भक्त विराजे, शिव निज शक्ति के संग साजे ।। 292 ।।

रूप अलौकिक दिव्य निराला, सारे संकट हरने वाला ।। 293 ।।

बाबा के जो द्वार पे जाता, पहले इनको शीश नवाता ।। 294 ।।

कितना ये सम्मान दिया है, निज चरणों में स्थान दिया है ।। 295 ।।

त्रिशक्ति का संगम पावन, धन्य हुआ मंदिर का प्रांगन ।। 296 ।।

सच्चे मन से जो भी ध्याता, बिन मांगे सब कुछ पा जाता ।। 297 ।।

माँ गायत्री- देवकीनंदन, धन्य-धन्य शत कोटि वंदन ।। 298 ।।

कलियुग की यह पावन गाथा, जो भी सुनता और सुनाता ।। 299 ।।

उनके सारे दुःख मिट जाते, मनवांछित फल पल में पाते ।। 300 ।।

एक मंदिर वैकुण्ठ है, एक मंदिर कैलाश ।

विष्णु अवतारी के संग, शिव-शक्ति का वास ।। दोहा 22

कलियुग में ऐसा नहीं, दूजा कोई स्थान ।

तीन शक्तियों का जहाँ, मिलता है वरदान ।। दोहा 23

----- इति -----

बोलिये बाबा गंगाराम की जय !

बोलिये भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन की जय !

बोलिये शक्ति स्वरूपा माता गायत्री देवी की जय !

बोलिये पंचदेव दरबार की जय !

बोलिये आशीर्वाद मन्दिर की जय !

आरती भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन
एवं देवी गायत्री की

ॐ जय देवकीनंदन, स्वामी जय देवकीनंदन।
जय – जय माँ गायत्री, दोनों को वंदन।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

गंगाराम प्रभु की, महिमा दर्शाई।
कलियुग में भक्ति की, शक्ति दिखलाई।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

गायत्री और देवकी, जग से न्यारे हैं।
भक्ति मार्ग प्रदर्शक, ये ध्रुव तारे हैं।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

देवकीनंदन ने जब, सत्य को अपनाया।
हरिश्चंद्र सम सब कुछ, त्याग के दोहराया।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

द्रौपदी ने टेरा था, केशव को जैसे।
गायत्री ने प्रभु से, विनती की वैसे।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

चिता में शीश से निकली, जब जल की धारा।
आशीर्वाद दिया तब, स्तब्ध जगत सारा।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

आशीर्वाद मंदिर में, दोनों हैं शोभित।
शिव शक्ति सम मूरत, मन होवे मोहित।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

युगल रूप की आरती, जो मन से गावे।
भक्ति भाव मन उमड़े, सुख संपति पावे।।

ॐ जय देवकीनंदन – ॐ गायत्री वंदन

आरती श्री बाबा गंगाराम की

जय श्री गंगाराम, बाबा जय श्री गंगाराम ।
नारायण अवतारी, सत् चित् आनन्द धाम ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

सत्य स्वरूप सनातन , नित लीला धारी ।
कलिमल तिमिर निवारक, जग पालनहारी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

तुम बैकुण्ठ विहारी, अगणित गुणराशी ।
झुंझुनूं धाम निवासी, घट घट के वासी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

श्वेतवर्ण पीताम्बर , वनमाला धारी ।
कोटि सूर्य सम शोभा, दर्शन शुभकारी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

देवकीनन्दन को प्रभु ,स्वप्न में दरश दियो ।
पावन धाम बनाकर, जग कल्याण कियो ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

पंचदेव मन्दिर में, राजत है ज्योति ।
भक्तों की मन वांच्छा, जहं पूरण होती ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

हम अति दीन अकिंचन, दया दृष्टि कीजै ।
कृपा करो करूणामय, चरण शरण लीजै ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

गंगाराम प्रभु की , आरती जो गावे ।
भुक्ति मुक्ति, धन सम्पद, अतिशय सुख पावे ।।

बाबा जय श्री गंगाराम ।।

बोलिये बाबा गंगाराम की जय ।